244वें सत्र से संबंधित समापन भाषण

श्री सभापति:माननीय सदस्यगण, अब हम इस सत्र की समाप्ति की ओर अग्रसर हो रहे हैं। माननीय प्रधानमंत्री, माननीय सभा के नेता, माननीय विपक्ष के नेता, इस सभा के माननीय सदस्यगण यह हमारे लिए एक अवसर है कि हम इस बारे में समीक्षा करें, याद करें और आत्मचिंतन करें कि सभा की कार्यवाही को हम सबने कैसे चलाया है। सभापति के रूप में मेरे लिए यह पहला पूर्ण सत्र रहा है। सबसे पहले मैं आपके सहयोग के लिए सभी माननीय सदस्यों के प्रति हृदय से अपना आभार प्रकट करना चाहूंगा। यद्यपि यह सभा कुछ महत्वपूर्ण कार्य कर सकी, फिर भी जो हुआ उससे बेहतर हो सकता था। हम सब इस देश की राजव्यवस्था में महत्वपूर्ण भागीदार हैं। तथापि, आप सभी मेरी इस बात से सहमत होंगे कि यद्यपि संसद एक राजनीतिक संस्था है फिर भी पारंपरिक अर्थ में यह राजनीति का विस्तार नहीं हो सकता जिसमें गहरे मतभेद और कटुता होती है। कभी-कभी ऐसा होता है, किन्तु, दिन के अंत में आमतौर पर यह देश और लोगों की भलाई होती है। वही रहना चाहिए। राष्ट्र के साझे सामाजिक-आर्थिक लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए जो नागरिकों- जो हमारे संसदीय लोकतंत्र के मुख्य संरक्षक हैं- की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण होते हैं, संसद एक महत्वपूर्ण संस्था है । हमारा राष्ट्र अपने अपार आदोहित सामर्थ्य को साकार करने की ओर लगातार विकसित हो रहा है। मैंने इस महती सभा के अपने पहले संबोधन में कहा है कि समय हमारे पक्ष में नहीं है तथा चूके हुए अवसरों और समय को पूरा करने के लिए हमें अपने आप को खींचना है। शीर्ष संसद सहित हमारे देश की विधायिकाओं को तेजी से उस तरह से विकसित होने की आवश्यकता है जिस तरह से हम अपना कार्य संचालन करते हैं ताकि हमारे विकसित होते राष्ट्र की जरूरतें पूरी हो सकें। सभा के इस सत्र में इसके उतार-चढ़ाव भी रहे। उच्च स्थिति यह थी कि सभा के दोनों पक्षों ने माननीय प्रधानमंत्री तथा माननीय पूर्व प्रधानमंत्री के पद और अन्य विशिष्ट व्यक्तियों का सम्मान करने और उनकी गरिमा बनाए रखने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दुहराई। मैं आशा करता हूँ कि यह भावना भविष्य में भी बनी रहेगी। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि काफी हद तक अपने दायित्वों का निर्वहन करने के बावजूद, बाधाओं और कार्यसमय के भारी नुकसान के कारण यह महती सभा लोगों का कुछ हद तक आदर खोते हुए समाप्त हुई। तीव्र और जोशीले भाषण तथा वाद-विवाद लोकतंत्र की कार्यविधि हैं, किन्तु कार्य में बाधा निश्चित तौर पर नहीं है। मैं माननीय सदस्यों से आग्रह करता हूँ कि वे इस संबंध में गंभीरतापूर्वक आत्मचिंतन करें।इस सत्र की एक अन्य बड़ी बात वह तरीका था जिस तरीके से इस सभा के सभी वर्गों ने श्री कुलभूषण जाधव के पाकिस्तान के एक जेल में अपने परिवार के सदस्यों से मुलाकात के संबंध में एक स्वर और संयमित तरीके से आवाज उठायी। आम चिंता के व्यापक मुद्दे पर दलगत भावना से परे जाकर सदस्यों का यह एक अनुकरणीय मामला रहा है। मैं यह देखकर प्रसन्न हूँ कि इस सभा में सभी दलों के नेता और माननीय सदस्यगण भी

सभा द्वारा वर्ष के प्रारंभ में तथा 15 लम्बे वर्षों के बाद 2 जनवरी, 2018 को सूचीबद्ध सभी तारांकित प्रश्नों को लेने का एक कीर्तिमान बनाने के संबंध में सकारात्मक मीडिया रिपोर्टों पर प्रसन्न दिखाई दिए। मुझे यह नोट कर खुशी हो रही है कि इस महती सभा में जिस तरीके से कार्यवाही चलती थी उसमें कतिपय अंश तक परिवर्तन आया है जो इस अनुकरणीय कार्य के अलावा है। समय की मांग है कि भविष्य में इस भावना को लेकर चला जाए। इस सत्र की 13 बैठकों के दौरान निपटाए गए कार्यों की माननीय सदस्यों को एक संक्षिप्त सांख्यिकी जानकारी देता हूँ। कुछ बाधाओं और स्थगनों के बावजूद 9 सरकारी विधेयक पारित किए गए, 19 गैर-सरकारी सदस्यों के विधेयक पेश किए गए तथा एक गैर-सरकारी विधेयक पर विस्तार से चर्चा की गई। दिल्ली में उच्च स्तर के वायु प्रदूषण के अलावा, इस सभा ने अर्थव्यवस्था की स्थिति तथा रोजगार सृजन के महत्वपूर्ण मुद्दों पर विचार विमर्श किया।

कल ही हमने देखा कि किस प्रकार से देश की आर्थिक स्थिति के संबंध में एक गहन विश्लेषण किया गया। अल्पकालिक चर्चा के दौरान, सभा के विभिन्न पक्षों ने अपना योगदान दिया है, हमारी अर्थव्यवस्था की ताकतों और कमजोरियों पर प्रकाश डाला है तथा सभा के नेता ने चर्चा का समापन किया तथा वास्तविक स्थिति और सरकार का रूख स्पष्ट किया। भविष्य में भी हम सभी के लिए यह एक आदर्श स्थिति होनी चाहिए कि हम यह सुनिश्चित करें कि हम मुद्दों पर गहराई से, विस्तार से, एक सार्थक और रचनात्मक तरीके से चर्चा करें।

इन पांच दिनों के दौरान जब प्रश्न काल लिया गया, तो 46 तारांकित प्रश्नों के मौखिक उत्तर दिए गए। इसके अतिरिक्त, 51 सदस्यों ने शून्य काल का उल्लेख किया और अन्य 50 सदस्यों ने लोक महत्व के मामलों का विशेष उल्लेख किया।

तथापि, यह अति दुःखद मामला है कि सभा ने किए गए कार्य के 41 घंटों की अवधि की तुलना में बहुमूल्य 34 घंटों का कार्य-समय गंवा दिया।

मुझे माननीय सदस्यों को यह सूचित करते हुए प्रसन्नता है कि राज्य सभा सचिवालय ने विभिन्न देशों के शीर्ष नेताओं, जिन्होंने 1955 से संसद के केन्द्रीय कक्ष में दोनों सभाओं के माननीय सदस्यों को संबोधित किया था, के एक अद्भुत विषय पर नववर्ष, 2018 का कैलेंडर प्रकाशित किया है। इस कैलेंडर में ऐसे 12 नेताओं के चित्र हैं। मैं महासचिव और उनके अधिकारियों की इस पहल के लिए उनकी प्रशंसा करता हूं।

तीन माननीय सदस्य नामतः डा. कर्ण सिंह, श्री जनार्दन द्विवेदी और श्री परवेज़ हाशमी, जोकि राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली का प्रतिनिधित्व करते हैं, इस महीने के दिनांक 27 को इस महती सभा से सेवानिवृत्त होंगे। हम सभी इस सभा की कार्यवाही के प्रति उनके दूरदर्शी योगदान को याद करेंगे।

आज प्रातः ही हमने देखा है कि उन्होंने इस सभा में अपना अंतिम योगदान कितने उत्कृष्ट ढंग से दिया है और समूची सभा ने उन्हें भावविभोर होकर सुना और इस सभा की कार्यवाहियों में उनके योगदान की हम भरपूर प्रशंसा करते हैं। हमें वास्तव में उससे प्रेरित होना चाहिए। सांसदों और विशेष रूप से युवा सांसदों को यह देखना चाहिए कि भविष्य में उन्हें भी ऐसा ही आचरण करना चाहिए और सभा और जनता से भी इसी प्रकार की प्रशंसा लेनी चाहिए। मैं इस सभा के सभी सदस्यों की ओर से भविष्य में उनके खुशहाल, स्वस्थ और सार्थक समय की कामना करता हूं।

मैं सभा के नेता, श्री अरुण जेटली का आभार व्यक्त करता हूं जो समय-समय पर हमें सरकार के दृष्टिकोण की जानकारी देते रहे और कुछ महत्वपूर्ण अवसरों पर जब कभी कतिपय मुद्दों को उठाया गया तो उनका स्पष्टीकरण भी दिया। मैं विपक्ष के नेता, श्री गुलाम नबी आज़ाद, संसदीय कार्य मंत्रियों, श्री अनंत कुमार और श्री विजय गोयल और इस सभा में विभिन्न दलों एवं समूहों का प्रतिनिधित्व करने वाले नेताओं का भी मुझे दिए गए सहयोग और सम्मान के लिए धन्यवाद करता हूं।

उपसभापति से मुझे बहुत सहायता मिली है। मैं उनका और उपसभाध्यक्षों के पैनल के सदस्यों और सचिवालय के अधिकारियों और कर्मचारियों का भी उनकी सहायता और सहयोग के लिए धन्यवाद करता हूं। सभा में उपसभापति को यह सबसे अधिक मिला है। आप जानते हैं कि मेरा अभिप्राय क्या है। उनमें सभा को संचालित करने की सहनशीलता और दृढ़ता भी है।

मैं सभी सदस्यों और जनता को वर्ष 2018, मकर संक्रांति, पोंगल और बिहू की बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं। जय हिन्द।